भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका
वर्ष 33 अंक (2) दिसम्बर 2025 पृ. 124-131
DOI: 10.56042/bvaap.v33i2.22142

गणितीय अंकों से भारतीय दर्शन के विभिन्न विषयों का विश्लेषण

अतुल गर्ग
गणित विभाग, राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना, राजस्थान 341 303 (भारत)

सारांश

गणित, विज्ञान की धुरी है। गणित से प्रकृति के नियमों और क्रियाओं का विश्लेषण करना संभव है। प्राकृतिक नियम या प्रकृति के नियम, वे पैटर्न हैं जिनका पालन प्रकृति करती है। ये नियम ब्रह्मांड में किसी भी स्थान या कण पर लागू हो सकते हैं। ब्रह्मांड कल नहीं बना। यह अरबों सालों से अस्तित्व में है। प्रकृति के इन नियमों को किसी ने नहीं बनाया, वे बस ब्रह्मांड की तरह ही अस्तित्व में हैं। प्रकृति के नियमों का एक पैटर्न होता है जो प्रयोगों के माध्यम से अवलोकन कर देखा जाता है। ये पैटर्न इस ब्रह्मांड में मौजूद हर चीज़ के लिए सही होते हैं।

इन नियमों या पैटर्न को समझकर इन्हें गणितीय समीकरणों में बनाया जाता है। गणित की खोज नहीं की गई थी। बल्कि, इसका आविष्कार नियमों की बेहतर समझ के लिए किया गया था। इसलिए समीकरण, प्रकृति के इन नियमों का न केवल पालन करती है बल्कि ये समीकरण उस महान वास्तविकता की छाप हैं जो वहाँ मौजूद है। अब एक ऐसा गणितीय मॉडल बनाने की कोशिश की जा रही है जो ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली को स्पष्ट रूप से दर्शा सके। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रकृति के मौजूदा नियम हमारे ब्रह्मांड में अतीत में जो कुछ हुआ, उसका परिणाम हैं। अगर चीजें वास्तव में जो हुआ उससे अलग होतीं, तो ये नियम अलग हो सकते थे। बाहरी अंतरिक्ष में लागू होने वाला प्रकृति का सबसे प्रमुख नियम गुरुत्वाकर्षण का नियम है जिन्हें महान वैज्ञानिकों ने समीकरणों में ढाला। आइये, प्रकृति के नियमों, सनातन धर्म में जुड़ी मान्यताओं तथा जीव-विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर गणित के दृष्टिकोण का विश्लेषण करते हैं।

मुख्य शब्दः योगांक, बीजीय व्यापकता, पंच महाभूत, मुक्ति, पवित्र संख्या 108, चुम्बकत्व।

Analysis of various aspects of Indian Philosophy with Mathematical Numbers

Atul Garg
Mathematics Department, Government Bangur PG College, Didwana, Rajasthan 341 303 (India)

Abstract

Mathematics is the axis of science. It is possible to analyze the laws and actions of Nature from mathematics. Natural laws or laws of nature are patterns that nature follows. These rules can apply to any place or particle in the universe. The universe did not form yesterday. It has been in existence for billions of years. No one made these rules of nature; they exist just like the universe. There is a pattern of nature's laws that are seen observing through experiments. These patterns are right for everything present in this universe.

They are made in mathematical equations by understanding these rules or pattern. Mathematics was not discovered. Rather, it was invented for better understanding of rules. Therefore, the equation not only follows these rules of nature, but these equations are the impression of the great reality that exists there. Now efforts are being made to create a mathematical model that can clearly show the functioning of the universe. Scientists believe that the current rules of nature are the results of what happened in the past in our universe. If things were really different from what happened, then these rules could have been different. The most prominent rule of nature applied in outer space is the law of gravity which the great scientists mold in equations. Come; let's analyze the laws of nature, beliefs associated in Sanatan Dharma and various aspects of biology.

Key words: Yogank, Seed prevalence, Panch Mahabhut, liberation, sacred number 108, magnetism.

प्रस्तावना

गणित में अंकों व संख्याओं का संसार अनूठा है। इनमें से कुछ अंकों का व्यवहार हमें अचंभित कर देता है। धार्मिक मान्यताओं, जीव जगत की विशेषताओं और ज्योतिषीय को समझने में 'योगांक' महत्वपूर्ण स्थान रखता है। योगांक सरल है। योगांक यानि ''संख्या में उपस्थित अंकों का योग''। जैसे संख्या 324 का योगांक 3+2+4 = 9 है। समस्त संख्याओं का योगांक 1 से 9 तक का ही कोई अंक होता है। योगांक में 0 का अस्तित्व नहीं है, इसमें केवल नौ अंक 1,2,3,4,5,6,7,8,9 होते हैं। शून्य का आविष्कार कालांतर में भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट ने किया जिससे आगे की संख्याएं 10, 11, 12, ..., सैकड़ा, हजार, लाख, करोड़... आदि बनी। योगांक के परिणाम अद्भुत व चकित करने वाले हैं। योगांक में शून्य नहीं है पर इसमें 9 का व्यवहार शून्य के समान रहता है।

अंक 9 की बीजीय व्यापकता

ब्रह्मांड में पृथ्वी पर जीव जगत का भरा-पूरा अनन्त संसार है। प्रत्येक जीव की अपनी विशेषताएँ हैं। जैसे दो जीव समान नहीं होते। अर्थात् एक ही प्रकार के दो जीव पूरी तरह से समतुल्य नहीं होते। उसी प्रकार गणित में संख्याओं का अपना अनन्त संसार है। प्रत्येक संख्या अपने आप में पूर्ण है तथा उसका अपना अस्तित्व है। जिस प्रकार दो जीव सामान नहीं होते ठीक उसी प्रकार दो संख्याएं कभी समान या बराबर नहीं होती। जिस प्रकार जीव अपने पूरे जीवन काल में प्रेम, द्वेष, लड़ाई, टांग खिंचाई आदि करते रहते हैं, उसी प्रकार संख्याएं भी जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि संक्रियाओं में हमेशा रत रहती हैं। मानव ने गणित को उसके अपने जीवन में होने वाली घटनाओं को देख कर ही बनाया है। मानव से मानव जुड़ा, + बना। अधिक मानव जुड़ने पर बुराई पनपी, - बना। और अधिक मानव जब जुड़े तो उसके मन में महत्वाकांक्षा जागी, x बना। टांग खिंचाई होने पर गणित ने भी भाग लगाना सीख लिया। जैसे 100 में 2 जोड़ने या घटाने पर तो 102 या 98 ही बनता है पर 100 को 2 से गुणा करने पर 200 और 2 से भाग लगाने पर सीधे 50 पर गिर जाते हैं।

प्रारंभ में जीव जगत की एक अति महत्वपूर्ण विशेषता पर चिंतन-मनन करते हैं। संपूर्ण जीव जगत की एक विशेषता है। वह अपने जैसा जीव स्वयं निर्माण करने में सक्षम है। जीव जगत अपनी संतान स्वयं पैदा करते हैं। वृक्ष अपने बीज स्वयं बनाते हैं। लेकिन मानव द्वारा किए गए यांत्रिक निर्माण में यह संभव नहीं है। मानव, फैक्ट्रियों में सभी वस्तुओं का निर्माण पूर्ण रूपेण करता है। किसी भी फैक्ट्री में 'शिशु' कंप्यूटर नहीं बनता जो स्वयं बड़ा होकर पूर्ण कम्प्यूटर बन सके। मानव निर्मित मोबाइल स्वयं अपनी संतान पैदा नहीं कर सकता आदि...।

1÷9 =	0.111111111...
2÷9 =	0.222222222...
3÷9 =	0.333333333...
4÷9 =	0.444444444...
5÷9 =	0.555555555...
6÷9 =	0.666666666...
7÷9 =	0.777777777...
8÷9 =	0.888888888...
9÷9 =	1

तो फिर क्या गणित की संख्याओं में भी ऐसा है? गणित के मूल अंक 1 से 8 अपने बीज स्वयं बनाते हैं। यदि मूल अंक को 9 में रोपित किया जाये अर्थात् 1/9 करें तो हमें दशमलव पश्चात् 1 के अनन्त मान प्राप्त होते हैं। निम्न सारणी में देखिए कि किसी भी अंक में 9 का भाग लगाने पर दशमलव के बाद वह अंक अनंत बार आते हैं-

तालिका

योगांक (संख्या में उपस्थित अंकों का योग) अंक 9 प्रकृति के अनेक स्थानों पर विद्यमान है। स्पष्ट है कि अंक 1 के बीज प्राप्त करने के लिए अंक 1 में 9 का भाग लगा दिया जाए तो 1 के बीज अनंत बार प्राप्त हो जाएंगे अर्थात् अंक 1 अपने बीज बनाने की अनंत संभावनाएं रखता है। इसी प्रकार शेष अंक 2 से 8 तक यही प्रक्रिया विद्यमान रहती है। अंक 9 को 9 में नहीं बोया जा सकता वह स्वयं में एकाकार हो जाता है। इसका अध्ययन का एक अलग अध्याय है।

यदि हम मूल अंकों के स्थान पर संख्याएं लेते हैं तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि अंकों से अलग हटकर कोई भी संख्या लें और उसको 9 से भाग लगा दें तो दशमलव के पश्चात् आने वाली संख्या स्पष्ट कर देगी कि उस संख्या का योगांक क्या है? इसे उदाहरण से समझते हैं-

माना कोई संख्या 23156 है जिसका योगांक 2+3+1+5+ 6 =17 का पुनः योग 8 है। अतः संख्या 23156 का योगांक 8 है। अब इस संख्या में 9 का भाग लगाते हैं। 23156/9=2572.888888... इस मान से स्पष्ट है की संख्या 23156 का योगांक 8 है जो दशमलव के बाद अनंत तक आ रहा है। अर्थात् यह संख्या अपना योगांक अनंत बार बताने में सक्षम है। यह नियम अनन्त संख्या संसार पर लागू है, बस केवल योगांक 9 की संख्या में 9 का भाग नहीं लगेगा। यही प्रकृति का नियम है। यहां दो बातें बड़ी आसानी से समझ में आ रही

हैं- एक, संख्या कितनी भी बड़ी ले लें, उसका योगांक या मूल स्वरूप, उसे 9 से विभाजित करने पर तुरंत जाना जा सकता है, दूसरा, वह अपने योगांक बीज रीप्रोड्यूस करने में सक्षम है। यह अभी गहन शोध का विषय है। गणित की इस विशेषता से जरूर कुछ छलकेगा, निष्कर्ष निकलेगा। गहराई से देखिए, सभी दिशाएं और क्रियाएं सरलता से स्पष्ट होने लगेंगी।

पंच-महाभूत की गणितीय व्याख्या

प्रयागराज में महाकुंभ लगा था। कुंभ स्नान से तात्पर्य यही माना जाता है कि वहां स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष तथा मुक्ति पर भारतीय दर्शन में व्यापक एवं विशद विवरण उपलब्ध है। शरीर तो केवल पंच महाभूत- क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा से निर्मित है। भारतीय दर्शन सांख्य, योग, मीमांसा आदि में इन्हीं पांच तत्वों को शरीर का सृजक माना है। यदि इसकी व्याख्या गणितीय अंकों से करें तो स्पष्टता ज्यादा मुखरता से प्रकट होती है। गणित में कुल नौ अंक 1,2,3,4,5,6,7,8, और 9 हैं, इन्हें प्राकृत अंक कहा जाता है। शून्य का आविष्कार कालांतर में हुआ तथा 0 दसवां अंक बना। इन्हीं अंकों से अनंत संख्या संसार बना है। गणित के इन दस मूल अंकों की अपनी अलग-अलग प्रकृति एवं व्यवहार है, जो अटल और दृढ़ है। शून्य, इतिहास के महान आविष्कारों में से एक है, जिसका मानवता के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ न होने की अवधारणा का प्रतीक शून्य, विज्ञान और आध्यात्मिक दुनिया की व्याख्या करने की क्षमता रखता है। यह शून्य का ही चमत्कार है कि यह एक को दस, दस को सौ, सौ को हजार, हजार से लाख, करोड़... कुछ भी बना सकता है। शून्य वैसे कहने को तो खाली, रिक्त, सिफर है, पर इसकी एक खासियत यह भी है कि यह बड़ी से बड़ी संख्या को अपने से गुणा कर उस संख्या को स्वयं में समाहित कर समाप्त कर देता है।

गणित के संख्या संसार में शून्य, संख्याओं को सृजन करने का वाला 'ब्रह्म' है। सभी संख्यायें शून्य द्वारा सृजित है। या कहें, शून्य संख्या की आत्मा है। शून्य से स्थानीमान इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, लाख, करोड़ ... आदि बने, जिन पर प्राकृत अंक अपना स्थान ग्रहण कर संख्या का सृजन करते हैं। जैसे संख्या 7235 = 7 x 1000 + 2 x 100 + 3 x 10 + 5 x 1 है। संख्या 7235 में शून्य कहीं भी नजर नहीं आ रहा है पर वह इसकी रग-रग में बसा है। शून्य से ही संख्या का अस्तित्व है। सभी संख्याएं इस संख्या संसार के माया-जाल-जोड़, बाकी, गुणा, भाग में उलझी रहती है। संख्या संसार में भी वही सब कुछ घटित होता है जो हमारे जीवन में चलता रहता है। खैर...

पंच महाभूत पर मनन करते हैं। तुलसीदास जी कह गए थे की 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच तत्व से बना शरीरा।' अर्थात् हमारा शरीर पांच तत्वों अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, और आकाश से बना है भारतीय दर्शन में भी यही पांच तत्व बताए गए हैं।

गणित में यदि मूल नौ प्राकृत अंकों का विश्लेषण करें तो उनके व्यवहार में स्पष्टता है। इस सृष्टि में किसी तत्व का अस्तित्व तभी है जब उसका विपरीत अवश्य विद्यमान हो। धनात्मकता का अस्तित्व तभी है जब ऋणात्मकता विद्यमान हो। जन्म तभी है जब मृत्यु हो, इसके मध्य में ही जीवन है। पहाड़ तभी बनता है जब गहरा गड्ढा खोदा गया हो तथा मध्य में समतल हो। चुंबक में नॉर्थ पॉल तभी है जब साउथ पोल व मध्य में शून्यता हो। इसी प्रकार इन मूल नौ अंकों में भी, चार अंक धनात्मक व चार अंक ऋणात्मक है तथा मध्य की शून्यता पर अंक 9 विद्यमान है। कहने अथवा देखने में तो यह अजीब प्रतीत होता है पर है शाश्वत। गणित के परिणाम सदा सटीक होते हैं, सदा परम सत्य से साक्षात्कार करवाते हैं। इन्हें प्रमाणित करना सरल है।

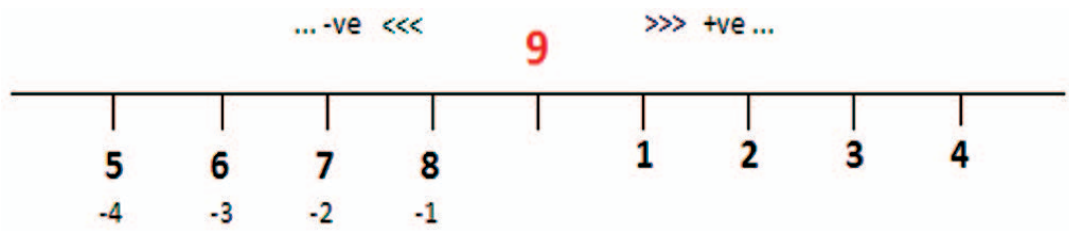

योगांक वह विधा है जिसमें अंकों के व्यवहार से प्रकृति को समझा जा सकता है। योगांक यानी संख्या में उपस्थित अंकों का योग। योगांक का एक मूल नियम है कि समान योगांक का व्यवकलन सदा नौ ही होता है। अर्थात् 1-1 = 9. इसे समझने के लिए समान योगांक की कोई भी दो मनचाही संख्या ले लें। जैसे 631 तथा 91, इन दोनों संख्याओं का योगांक 1 है। इनके अंतर का योगांक 9 ही आएगा। 631- 91 = 540 का योगांक 5 + 4 + 0 = 9 है। इस नियम का विस्तार अनन्त तक है। इसे योगांक का 'थंब रूल' भी कह सकते हैं। आप स्वयं करके देख लीजिए। इस तरह से योगांक में 1-1 = 9 है। लेकिन इसी योगांक में 1 + 8 = 9 भी सही है। अतः दोनों परिणाम से -1 = 8 प्राप्त होता है। अर्थात् 1 का ऋणात्मक मान 8 है। इसी प्रकार योगांक में 2 - 2 = 9 तथा 2 + 7 = 9 होता है अतः 2 का ऋणात्मक मान 7 है। यही सूत्र 3 व 4 का ऋणात्मक मान 6 व 5 प्रतिपादित करता है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि 1, 2, 3 तथा 4 के ऋणात्मक मान क्रमशः 8,7,6 तथा 5 है। अंक 9, शून्य की स्थिति को परिलक्षित करता है। अतः गणितीय व्याख्या से स्पष्ट है कि मूल अंक 1, 2, 3, 4 तथा 9 है शेष अंक 5, 6, 7, 8 क्रम से 4,3,2,1 के ऋण मान है। अतः योगांक की अक्षीय रेखांकन उपरोक्त है-

गणित योगांक में भी 9 - 9 = 9 आता है। इसलिए आकाश का विलोम तो आकाश ही संभव है। दर्शन सांख्य, योग, मीमांसा आदि में यही पंचतत्व है। चार्वाक दर्शन में तत्वों को चार, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि ही माना है। इनके यह मानने का कारण भी गणितीय व्याख्या से स्पष्ट है। उन्होंने आकाश को अलग रखा है तथा इसमें उत्पन्न ध्वनि को पांच तत्व में स्थान दिया है।

यदि अंकों को भारतीय दर्शन में बताए गए पांच तत्वों से मिलाया जाए तो उपरोक्त परिणाम सही प्रतीत होते हैं या परिलक्षित होते हैं। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी का अस्तित्व तभी विद्यमान हो सकता है जब इनके विलोम का अस्तित्व भी विद्यमान हो। उपरोक्त का विलोम, यूनिवर्स में विद्यमान है। व्योम में अग्नि का विलोम शीत, जल का विलोम शुष्कता, वायु का निर्वात, पृथ्वी का ब्लैक होल तथा आकाश का विलोम शायद आकाश ही विद्यमान है।

निम्न श्लोक बृहदारण्यक उपनिषद के पांचवें अध्याय और ईशावास्योपनिषद से लिया गया है जो वेदांत दर्शन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्, पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवाव शिष्यते।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

1. अर्थ (अद्वैत अवधारणा)

पूर्णमदः पूर्णमिदं - (वह और यह दोनों पूर्ण हैं) (परमात्मा ∞, सृष्टि ∞)

पूर्णात् , पूर्णमुदच्यते . (पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है) (∞ + ∞ = ∞)

पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवाव शिष्यते। - (पूर्ण से पूर्ण निकालने पर भी पूर्ण बचता है)) (∞ - ∞ = ∞)

2. गणितीय अर्थ (द्वैत से अद्वैत की ओर अवधारणा)

पूर्णमदः: वह (परमात्मा, चेतन, ब्रह्म-0) पूर्ण है।

पूर्णमिदः यह (संसार, सृष्टि -1 (संख्याएँ)) भी पूर्ण है।

पूर्णात् पूर्णमुदच्यतेः पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है। (ब्रह्म-0 से सृष्टि उदय होना, संख्याएँ उदित होना - स्थानीमानो से)

पूर्णस्य पूर्णमादायः पूर्ण में से पूर्ण निकलने पर, (ब्रह्म से 0-0 अथवा सृष्टि 1-1)

पूर्णमेवावशिष्यतेः जो शेष रहता है, वह भी पूर्ण है। (0-0=0 तथा 1-1=0)

(व्याख्या- 0, संख्या संसार का चेतन तत्व है। शून्य संख्याओं में कही दिखाई नहीं देता जबकि यह संख्याओ के स्थानिमानो के रूप में उनकी रग-रग में बसा होता है। गणित में शून्य- जो कुछ नहीं, वही सब कुछ है। इसी प्रकार संख्या संसार अनन्त है जिसका प्रारंभ 1 से होता है। जैसे 1+1=2, 2+1=3,...आदि। अनंत, 0 व 1 से भी उत्पन्न होता है। 1/0 = ∞)

अर्थात 'वह (ब्रह्म) पूर्ण है, यह (सृष्टि) भी पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण प्रकट हुआ है, पूर्ण में से पूर्ण निकालने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है।'

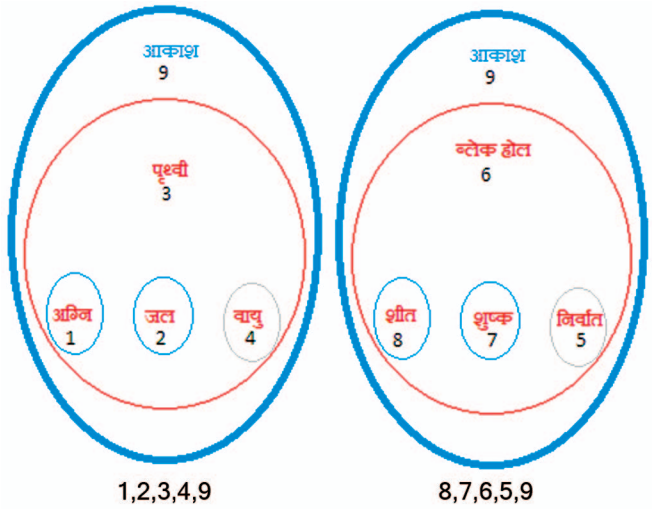

परिणामतः संख्या संसार के पांच तत्व 1,2,3,4 व 9 हैं तथा शून्य संख्या संसार की आत्मा है। यह परिणाम भारतीय दर्शन के पांच तत्वों के समतुल्य या उनमें समाहित है। अतः संख्या 7235 का वास्तविक स्वरूप (-2) (+2) (+3) (-4) है। इस संख्या 7235 के गुणों में अंक +2, +3 तथा ऋण मान 2, 4 के धन की प्रधानता है। इसी के अनुसार इसका व्यवहार व प्रकृति निश्चित होगा, जो शोध का विषय है। शायद जीव में भी पांच तत्व के साथ उनके ऋणात्मक मान शीत, शुष्क, निर्वात आदि का शरीर में समावेश होता होगा जिससे उसकी धन (देव) तथा ऋण (असुर) प्रकृति निश्चित होती होगी। खैर...

सारांश में जिस प्रकार संख्या के मूल अंकों में चार धन, चार ऋण व शून्यता 9 विद्यमान है, इसी से अनंत संख्या संसार बनता है, चेतन तत्व शून्य 0 के अपने अलग नियम व कायदे हैं, जिसके अधीन रहकर समस्त अंकों व संख्याओं को नियम मानने होते हैं। उसी प्रकार भारतीय दर्शन अनुसार जीव जगत में भी जीवन चेतन-ब्रह्म से संचालित होता है तथा शरीर पांच तत्वों से बना है जीवन ब्रह्म से तथा तन की प्रकृति तत्वों से निर्धारित होती है। जिस दिन हम तत्वों का सही व सटीक मान प्राप्त कर लेंगे उस दिन मानव जीवन और अधिक स्पष्ट, सरल और सुगम हो जाएगा।

अंकों से मुक्ति एवं मोक्ष

यदि इन अंकों के व्यवहार और प्रकृति को गहराई से समझना और जानना है तो योगांक में उतरना होगा योगांक यानी संख्या में उपस्थित अंकों का योग। हमारे वेदों और शास्त्रों में हमारे जीवन के बारे में कही गई आत्मा, मुक्ति, मोक्ष आदि बातों को इन अंकों से समझना और जानना बहुत सरल है।

आइए, अंकों से जीव जगत को चलायमान करने वाली और हमारे वेदों तथा शास्त्रों में बताए गए चेतन तत्व अर्थात् आत्मा की बात समझते हैं। प्रारंभ में कुल 9 अंक 1 से 9 बने कालांतर में शून्य का आविष्कार हुआ जिससे इन अंकों को जीवन मिल गया अब संख्याएं बनने लगी। शून्य से स्थानीय मान इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, लाख... आदि स्थापित हुए तथा उन पर अंकों ने स्थान ग्रहण कर संख्या बनने लगी। संख्या 3217 में शून्य कहीं नजर नहीं आता लेकिन वह इसकी रग रग में बसा हुआ है क्योंकि संख्या 3217 का निर्माण स्थानीय मान हजार पर अंक 3, 2 के सैकड़ा 1 के दहाई तथा 7 के इकाई स्थान पर मान ग्रहण करने से हुआ है।

3217=3*1000+2*100+1*10+7*1

संख्या संसार अनंत है जिसका चेतन तत्व शून्य है। संख्याओं में शून्य ठीक उसी प्रकार रचा बसा है जिस प्रकार हमारे शरीर में आत्मा। जिस प्रकार आत्मा बिन शरीर का अस्तित्व नहीं है, ठीक उसी प्रकार शून्य बिन संख्या का अस्तित्व संभव नहीं है। शून्य के कारण संख्या संसार चलायमान है। जिस प्रकार हम अपने जीवन में मोह-माया के जाल में जकड़े रहते हैं उसी प्रकार यह संपूर्ण संख्याएं भी जोड़, बाकी, गुणा, भाग के जाल में फंसी रहती हैं। संख्याओं में थोड़ा बहुत जोड़, बाकी तो ठीक है लेकिन गुणा (महत्वाकांक्षा) या भाग (टांग खिंचाई) बड़ा परिवर्तन लाता है। जैसे 100+2=102 अथवा 100- 2=98 होता है लेकिन 100*2=200 तथा 100/2=50 हो जाता है। हमारे जीवन में भी सब कुछ यही घटित होता है यदि हम अपने व्यवहार में थोड़ा बहुत ऊंचा-नीचा करें तो चलता है लेकिन महत्वाकांक्षा में पड़ कर, बहुत अधिक पाने की इच्छा हमेशा दूसरों को टांग खिंचाई के लिए प्रेरित करती है तथा पूरे सिस्टम को प्रभावित करती है। गणित की इन क्रियाओं से जीवन को समझना आसान है और उसे सरल बनाया जा सकता है।

कहने को तो शून्य रिक्त, खाली, कुछ नहीं है पर गणित में यह सबसे शक्तिशाली अंक है। बड़ी से बड़ी संख्या शून्य से टकराने पर शून्य में विलीन हो जाती है (अ×0=0). सब कुछ समाप्त। अर्थात् जो कुछ नहीं है वही सब कुछ है। यही संख्याओं का चेतन तत्व है। यही आत्मा है।

महाकुंभ के अवसर पर सोशल मीडिया पर आत्मा, मोक्ष और मुक्ति विषय बहुत वायरल हो रहा था। चूँकि मानव इनसे सीधा जुड़ा हुआ है तो वह इसे जानने और समझने के लिए व्याकुल रहता है। हमारे शास्त्रों में ऋषि-मुनि अंकों की महिमा को अंकित कर गए हैं पर वे शास्त्र या तो उपलब्ध नहीं हैं या जो उपलब्ध हैं उन्हें समझने में सब सक्षम नहीं हैं। इसलिए जनमानस में ये विषय गूढ़ और क्लिष्ट बने हुए हैं। हर कोई अपने जन्म, जीवन, मरण के रहस्य को जानना चाहता है कि कहाँ से आये हैं, कैसे जीवन सरल, व्यवस्थित व शांति से चलाया जाये और कैसे शांति और संतुष्टि प्राप्त करके निर्वाण प्राप्त करें। मरने के पश्चात् कहाँ जाते हैं और स्वर्ग कैसे मिलेगा, यही प्रश्न उसे जीवन पर्यन्त परेशान करते हैं। गणित से इन विषयों को समझना सरल है। चूँकि गणित सदा परम सत्य से साक्षात्कार करवाता है इसलिए इसके परिणाम शाश्वत होते हैं।

मुक्ति को समझने के लिए हमें गणित योगांक को जानना होगा। योगांक सरल है। योगांक यानि संख्या में उपस्थित अंकों का योग। जैसे संख्या 3267 का योगांक 3+2+6+7= 18, का पुनः योग = 9. अतः संख्या का योगांक 9 है। अर्थात संख्या 3267 का मूल अंक 9 है। इस प्रकार योगांक से संख्या शून्य मुक्त होकर मूल तत्व में समाहित हो जाती है, यही मुक्ति है। योगांक द्वारा अनन्त संख्या संसार की प्रत्येक संख्या शून्य मुक्त होकर मूल प्राकृत अंकों 1 से 9 में समाहित हो जाती हैं। यह भी कह सकते हैं की योगांक वह सिंक है जिसमें संख्या प्रवाहित होने पर शून्य मुक्त होकर मूल प्राकृत अंकों में विलीन हो जाती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे मृत्यु पश्चात् जीव का शरीर पंच तत्व में विलीन होता है।

संख्याएं तो मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं। यदि संख्या को शून्य से गुणा कर दिया जाये तो वह संख्या मूल अंकों में न मिलकर, सदा के लिए शून्य में विलीन होकर अनंत में समाहित हो जायेगी या कहें परम शांति अथवा मोक्ष को प्राप्त कर लेगी। हमें मोक्ष प्राप्त करने के लिए आत्मा से गुणन का तरीका जानना होगा। जिस दिन हमने इसे खोज लिया उसी दिन मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर लेंगे।

अंकों में भी होते हैं चुम्बक के गुण

गणित के 9 अंक 1 2 3 4...9 को, पता ही नहीं कब किसने कैसे और क्यों बनाया। इनमें ऐसा क्या था कि ये नौ ही हैं। न कम न ज्यादा। इनमें पूर्णता है। कालांतर में भारतीय महान गणितज्ञ

पहाड़ा 1	योगांक
1	1
2	2
3	3
4	4
5	5
6	6
7	7
8	8

पहाड़ा8	योगांक
8	8
16	7
24	6
32	5
40	4
48	3
56	2
64	1

आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार किया। जिससे सभी संख्याएं बनीं। बड़ी से बड़ी संख्या शून्य द्वारा स्थापित स्थानीमान से सरलता से व्यक्त की जाने लगी। शून्य का उपस्थिति मूल नौ अंकों पर ठीक वैसे ही है जैसे जंगल में शेर या नभ में बाज की। शेर या बाज की उपस्थिति में सभी जीव जंतु या पक्षी अपना आपा खो बैठते हैं। उन्हें अपनी सुध बुध ही नहीं रहती। उनका मूल व्यवहार भय ग्रस्त एवम दिशाहीन हो जाता है। यही स्थिति शून्य की उपस्थिति में 9 अंकों 1, 2, 3, ... , 9 की है। यदि उनके मूल व्यवहार को जानना है तो शून्य को हटाकर देखना होगा। योगांक यही कार्य करता है। योगांक यानी 'संख्या में उपस्थित अंकों का योग'। हम कोई भी संख्या लें और उसके अंकों का योग लगातार करें तो हमें 1, 2, 3, ... , 9 अंकों में से कोई एक अंक प्राप्त होगा। इसे ही योगांक कहते हैं। योगांक एक प्रकार की वह "सिंक" है जिसमे संख्याएं प्रवाहित होकर अपने मूल अंक में परिवर्तित हो जाती हैं। इसमें 0 विलोपित हो जाता है। योगांक बहुत विस्तृत एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो शायद हमारे भविष्य को सरलता से परिभाषित करेगा।

इन नौ अंकों का व्यवहार प्राकृतिक नियमों से मेल खाता है। इसीलिए शायद मूल अंक नौ ही बनाए गए थे। आइए, आज हम चुंबक और अंकों में समानता का अध्ययन करते हैं। चुंबक में दो ध्रुव नॉर्थ व साउथ होते हैं। इन ध्रुवों के मध्य शून्यता की स्थिति भी

विद्यमान रहती है। ठीक इसी प्रकार मूल नौ अंक भी चुंबकत्व का पालन करते हैं। हम जानते हैं कि $1+8=9, 2+7=9, 3+6=9$, तथा $4+5=9$ होता है। अब योगांक सारणियों से इनका व्यवहार समझते हैं। इन अंकों के पहाड़े हम सभी ने छोटी कक्षाओं में पढ़े हैं। आइए समझते हैं-

हम सभी ने चुंबक देखा है। उसमें नॉर्थ पोल तथा साउथ पोल बिलकुल विपरीत प्रकृति के होते हैं लेकिन होते एक ही चुंबक में हैं। नॉर्थ पोल N हमेशा साउथ पोल S को आकर्षित करता है और S हमेशा N को। यही प्रकृति 1 व 8 अंक की है। निम्न योगांक पहाड़ा सारणियों को ध्यान से देखिए-

इनमें योगांक का क्रम बिल्कुल उलट है। जहां 1 की सारणी में योगांक 1, 2, 3, ..., 8 है वहीं 8 की सारणी में योगांक का क्रम 8, 7, 6, ..., 1 है। यानी उनकी प्रकृति विपरीत है पर एक ही चुंबक में होने से मित्रवत भी हैं।

यदि 8 की घातांक योगांक सारणी देखें तो चौकाने वाले परिणाम सामने आते हैं। देखिए उनकी मित्रता एवं प्रकृति। सारणी में अनन्त तक 8 व 1 सदैव साथ रहते हैं। इनके अलावा किसी अन्य अंक का इस सारणी में स्थान नहीं है।

घातांक 8^	योगांक
8^1=8	8
8^2=64	1
8^3=512	8
4096	1
32768	8
...	1
...	8
अनंत	तक...

स्पष्ट है कि अंक 1 व 8 एक ही चुंबक के दो ध्रुव हैं।

यदि संकारको से देखे तो $1 + 8 = 9$ तथा योगांक में $1 - 1 = 9$ होता है। अतः $8 = -1$ है। यह अंक 1 व 8 के एक ही चुम्बक में होने के मूल भाव को प्रदर्शित करता है। अंक 9 परिपूर्ण है। अतः अंक 9 मध्य की शून्यता की स्थिति में स्थित है। अन्य अंकों 2-7, 3-6 और 4-5 की सारणियों में प्रदर्शित होती है।

इस प्रकार नौ अंकों के कुल चार अलग-अलग चुम्बक क्रमशः 1-8, 2-7, 3-6, 4-5 हैं। ये सभी चुंबक के मूल भाव को प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक चुम्बक के संगत योगांक का योग सदैव 9 ही रहेगा अर्थात् एक चुम्बक में स्थित अंकों की प्रकृति विपरीत है। परिणामतः नौ अंकों में चार धनात्मक, चार ऋणात्मक तथा अंक 9 शून्यता की स्थिति में है। योगांक में शोध अभी प्रारंभिक स्तर पर है इसके परिणाम चौंकाने वाले हैं। जिस दिन हम इसे पूरी तरह जान लेंगे उस दिन हम अपने भविष्य को संजो लेंगे।

पवित्र संख्या 108 की गणितीय व्याख्या

गणित में गणनाएं सहज, सरल व सटीक हैं। इसे केवल समझने की आवश्यकता है। गणित के परिणाम शाश्वत व परम सत्य का साक्षात्कार होते हैं। इसी क्रम में संख्या 108 को एक विशेष संयोजन के रूप में माना जा सकता है।

योगांक में हमने जाना कि योग में $1 + 8 = 9$ तथा घटाव में $1 - 1 = 9$ होता है। $1 - 1 = 9$ के प्रमाण के लिए आप कोई भी दो संख्या ले लें जिनका योगांक 1 है। उन्हें घटाने पर परिणाम के अंकों का योग सदैव 9 ही आएगा। जैसे योगांक एक की दो संख्याओं $523-82 = 441$ है, जिसका योगांक 9 है।

इन दोनों समीकरणों से हम देखते हैं कि $1 + 8 = 1 - 1$ अर्थात् $8 = -1$ होता है यह परिणाम 108 की गणितीय व्याख्या करने में महत्वपूर्ण है। वास्तव में $108 = 10\ (-1)$ है, जो सृष्टि का मूल नियम

table2	योगांक
2	2
4	4
6	6
8	8
10	1
12	3
14	5
16	7

table 7	योगांक
7	7
14	5
21	3
28	1
35	8
42	6
49	4
56	2

table 3	योगांक
3	3
6	6
9	9
12	3
15	6
18	9
21	3
24	6

table 6	योगांक
6	6
12	3
18	9
24	6
30	3
36	9
42	6
48	3

table 4	योगांक
4	4
8	8
12	3
16	7
20	2
24	6
28	1
32	5

table 5	योगांक
5	5
10	1
15	6
20	2
25	7
30	3
35	8
40	4

है। यदि धनावेश है तो ऋणवेश के साथ-साथ शून्यता भी होगी। जैसे हम जमीन पर रेत का पहाड़ बनाना चाहते हैं तो गड्ढा खोदना होगा। यानी तीन स्थिति सामने आती हैं पहाड़, समतल और गड्ढा। ऐसे ही चुंबक में भी नॉर्थ पोल साउथ पोल और मध्य में शून्यता की स्थिति होती है। चूँकि जीवन का विलोम मृत्यु है तथा 0 संख्याओं की आत्मा है। 1, 0, (-1) यानि जन्म, जीवन और मृत्यु। इसलिए 1, 0, (-1) में जीवन आरंभ (जन्म) 1 से, 0 से जीवन और मृत्यु (-1) तक ही हमारा अस्तित्व है। 0 तो जीवन की जीवन्तता या जीव में आत्मा का वास है। अतः 108 मनको की माला जपने पर व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक की यात्रा आत्मा के सानिध्य में पूर्ण करता है। अतः 108 मनको की माला फेरने का अर्थ जीवन यात्रा चक्र पूर्ण करना है।

इसी प्रकार व्यक्ति के नाम से पूर्व श्री श्री 108 लिखना, उन्हें जीवन पर्यंत सम्मानित करना है। संख्या 108 गणित के मूल अंकों 1,0 व विलोम - 1 का मूल आधार है। क्योंकि संख्या को 10 (-1) से नहीं लिखा जा सकता तथा योगांक में -1 बराबर 8 होता है अतः सृष्टि के इस मूल नियम को 108 द्वारा शुभ या पवित्रता के रूप में लिखा जाने लगा। (नोटः ये लेखक के अपने विचार हैं। इस पर सबका सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

परिणाम

गणितय अंकों की उपरोक्त विशेषताओं से जरूर कुछ छलकेगा, निष्कर्ष निकलेगा और अधिक गहराई में जाने पर सभी दिशाएं और क्रियायें अधिक स्पष्ट होंगी। जिस दिन हम इन सभी दिशाओं और क्रियाओं का सही व सटीक मान प्राप्त कर लेंगे उस दिन मानव जीवन और अधिक स्पष्ट, सरल और सुगम हो जाएगा।

संदर्भ

1. शर्मा, शिव (2003), ब्रिलिएंस ऑफ हिंदुइज्म- डायमंड पॉकेट बुक्स (पी). पृ. 93.
2. ''पंच-भूत-तत्वों-की-संभावना'', ishafoundation.org, 2012.
3. ''पंचभूत की कहानी', www-wisdomlib-org, 2022.
4. ''विज्ञान प्रगति'' CSIR, New Delhi, ISSN 00426075, Mar-2024, p-64-65
5. ''विज्ञान सम्प्रेषण'', UCOST, Dehradoon, ISSN 2583 6064, Mar- 2024 p-58-59
6. ''वैज्ञानिक'', हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, पुणे, ISSN 2456-4818, अप्रेल-जून 2025.